

इलाज करेगी एक विषैली गैस

कार्बन मोनोऑक्साइड का नाम तो आपने सुना ही होगा। यह गैस शरीर में पहुंच जाए, तो जानलेवा हो सकती है। खून में कार्बन मोनोऑक्साइड पहुंच जाए, तो यह ऑक्सीजन का स्थान ले लेती है। तब खून शरीर के अंगों को ऑक्सीजन नहीं पहुंचा पाता।

मगर अब कुछ वैज्ञानिक कह रहे हैं कि यही कार्बन मोनोऑक्साइड कुछ रोगों में दवा का काम कर सकती है। हाल में किए गए प्रयोगों से पता चला है कि फेफड़ों के रोग (क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव रोग) से ग्रस्त लोगों को कार्बन मोनोऑक्साइड देने पर उनकी हालत में सुधार होता है।

इसके अलावा ऐसे भी संकेत मिले हैं कि यह गैस जीर्ण सूजन के मामलों में भी उपयोगी हो सकती है। जंतुओं पर किए गए प्रयोग दर्शाते हैं कि थोड़ी मात्रा में कार्बन मोनोऑक्साइड सूजन कम कर सकती है और ऊतकों को ऑक्सीकरण से होने वाले नुकसान से बचा सकती है।

वैसे यह बात काफी समय से पता रही है कि जब ऊतकों में सूजन होती है तो खून में ऑक्सीकरण-रोधी पदार्थ उत्पन्न होते हैं और इसी प्रक्रिया में कार्बन मोनोऑक्साइड भी बनती है। पहले यह सोचा जाता था कि यह उस प्रक्रिया का एक फालतू गौण उत्पाद है। मगर अब लगता है कि यही गैस सूजन को कम करने का काम करती है।

नीदरलैण्ड में ग्रोनिन्जेन विश्वविद्यालय मेडिकल सेंटर के हुइब कस्टर्जेन्स और उनके साथियों ने 18 व्यक्तियों को चार

दिन तक प्रतिदिन 2 घण्टे कार्बन मोनोऑक्साइड सुंघाई। इसके बाद इन लोगों के बलगम की जांच करने पर पता चला कि उसमें इस्नोफिल की संख्या काफी कम हो गई थी। इस्नोफिल वे सफेद रक्त कोशिकाएं हैं, जो सूजन को बढ़ाती हैं। इसके अलावा इन लोगों के फेफड़े भी ज़्यादा साफ थे। इन प्रयोगों से उत्साहित कस्टर्जेन अब कार्बन मोनोऑक्साइड की पूरी जांच का मन बना चुके हैं।

कुछ शोधकर्ता कार्बन मोनोऑक्साइड की जांच गठिया व दमा जैसे रोगों के संदर्भ में भी कर रहे हैं। ये ऐसे जीर्ण रोग हैं जिनमें ऊतकों में लगातार सूजन बनी रहती है।

कुछ अन्य शोधकर्ता गुर्दा प्रत्यारोपण में भी कार्बन मोनोऑक्साइड की भूमिका पर प्रयोग कर रहे हैं। आम तौर पर प्रत्यारोपण से पहले गुर्दा ऑक्सीजन विहीन परिस्थिति में रखा जाता है। जब इसे प्राप्तकर्ता के रक्त संचार से जोड़ते हैं, तो ऑक्सीजन इसे नुकसान पहुंचा सकती है। शोधकर्ता जानना चाहते हैं कि क्या कार्बन मोनोऑक्साइड इस क्षति को रोक सकती है।

तो इस विषैली गैस के कई चिकित्सकीय उपयोग सामने आने की उम्मीद है, और शायद जल्दी ही सिलेंडरों में कार्बन मोनोऑक्साइड मिलने लगे। मगर कुछ अन्य शोधकर्ता ऐसे पदार्थों की खोज कर रहे हैं जिनके सेवन के बाद शरीर में धीरे-धीरे कार्बन मोनोऑक्साइड निकलती रहेगी, उसे सुंघने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। (स्रोत फीचर्स)